निःशेष

मुझे
कहना है अभी
वह शब्द
जिसे कहकर
निःशब्द को जाऊँ
मुझे
देना है अभी
वह सब
जिसे देकर
निःशेष हो जाऊँ
मुझे
रहना है अभी
इस तरह
कि मैं रहूँ
लेकिन
'मैं' रह न जाऊँ।

मैं तुम्हारा हूँ

मुझे उन अर्थों में
अपना मत मानना
जिन अर्थों में लोग
किसी को अपना कह देते हैं।
मैं तुम्हारा हूँ
उस तरह
जिस तरह, कोई
अपना होता है।
मैं तुम्हारा हूँ
उस तरह
जिस तरह, कोई
सबका होता है।
मैं तुम्हारा हूँ
उस तरह
जिस तरह, कोई
परमात्मा का होता है।

एक अहसास था

जहाँ तरलता थी
मैं डूबता चला गया,
जहाँ सरलता थी
मैं झुकता चला गया,
संवेदनाओं ने
मुझे जहाँ से छुआ
मैं वहीं से
पिघलता चला गया।
सोचने को
कोई चाहे
जो सोचे,
पर यह तो एक
अहसास था
जो कभी हुआ
कभी न हुआ।

सम्बल

जब भी
कोई चिड़िया
मेरे आसपास
अपना घर
बना लेती है,
मैं गहरे आत्म–विश्वास से
भर जाता हूँ,
कि मेरे प्रति
वह कितनी विश्वस्त है।

मुझे उसके विश्वास को
सम्बल देना है।

मन ही तो है

यह जानते हुए भी
कि किसी को
कुछ दे नहीं पाऊँगा,
दिया भी नहीं जा सकता,
मन करता है
अपने को समूचा दे दूँ।

किसी की पीड़ा
बाँट नहीं सकूँगा,
कोई बाँट भी नहीं सकता,
मन करता है
सबकी पीड़ा
अपने में ले लूँ।

सारा रास्ता
अकेले ही तय करूँगा,
सभी को करना होता है,
मन करता है
कि सबको साथ ले लूँ।

गन्तव्य

यात्रा पर निकला हूँ,
लोग बार–बार
पूछते हैं, कितना चलोगे?
कहाँ तक जाना है?

मैं मुस्कुराकर
आगे बढ़ जाता हूँ,
किससे कहूँ
कि कहीं तो नहीं जाना,

मुझे इस बार
अपने तक आना है।

सीढ़ी हूँ

मैं तो
लोगों के लिए
एक सीढ़ी हूँ,
जिस पर
पैर रखकर
उन्हें ऊपर पहुँचना है।
तब सीढ़ी का
क्या अधिकार
कि वह सोचे,
कि किसने
धीरे से पैर रखा
और कौन
उसे रौंदता चला गया।

मरने से पहले हर दिन

जो भी कहना है
अब कल कहूँगा,
जो भी करना है
वह आज ही कर लूँगा।
असल में,
जीने का कोई एक दिन
तय नहीं होता
मरने की तरह,
इसलिए मैं
मरने से पहले
हर दिन
पूरी तरह
जीना चाहूँगा।

उपलब्धि

उपलब्धि के नाम पर
मैंने क्या पाया है,
यदि यह पूछते हो
तो सुनो –
मैंने पायी है एक जगह
जहाँ मैं अपने को
खो पाता हूँ,
ज्हाँ मैं अपने को
पा जाता हूँ,
जहाँ मैं
और अकेला मैं/रहता हूँ।

चित्रांकन

उसने कहा–
जीवन में
एक चित्र ऐसा बनाना
की जिसमें सब ओर
खुला आकाश हो
की अपनी सीमाएँ
स्वयं निर्धारित करता
कोई महासागर हो,
की अपने ही बनाये
किनारों के बीच
बहती नदी हो,
की अपने ही हाथों
अपना सर्वस्व लुटता
एक वृक्ष हो
और समूचे आकाश को
अपने गीतों से
भर देने वाली
कोई चिड़िया हो,
जरुर बनाना
जीवन का ऐसा चित्र,
जिसमे जीवन और जगत के बीच
सीधा सम्बन्ध हो.

प्रतिदान

चिड़िया ने
अपनी चोंच में
जितना समाया
उतना पीया
उतना ही लिया,
सागर में जल
खेतों में दाना
बहुत था.
चिड़िया ने
घोंसला बनाया इतना
जिसमे समा जाए
जीवन अपना
संसार बहुत बड़ा था.
चिड़िया ने रोज
एक गीत गाया
ऐसा जो
धरती और आकाश
सब में समाया
चिड़िया ने सदा सिखाया
एक लेना
देना सवाया.

स्वीकारोक्ति

हम
सबकी सब बातें
चुपचाप स्वीकार कर लेते हैं।
लोग कहते हैं
कि सब स्वीकार करते जाना
कमजोरी है।
सो हम इस बात को भी
स्वीकार कर लेते हैं।
क्या करें
हम कमजोर हैं
हमसे व्यर्थ
लड़ा नहीं जाता।

सहयात्राएँ

चलते–चलते
देखता हूँ,
अनायास ही
कोई न कोई
साथ हो जाता है।
कुछ दूर
वह साथ चलता है
फिर या तो
ठहर जाता है
या रास्ता ही बदल लेता है।
मैं यह सोचकर
आगे बढ़ जाता हूँ,
कि साथ चलने का सुख
इतना ही होता है।

चुप रह जाता हूँ

जब कभी
लगता है
कि तुमसे पूछूँ–
बच्चों की तरह,
कि सूरज को
रोशनी कौन देता है,
कि आकाश में
इतना नीलापन
कहाँ से आता है,
कि सागर में
इतना पानी
कौन भर जाता है,
तब यह सोचकर
कि कहीं तुम हँसकर
टाल न दो
कि मैं बड़ा हो गया हूँ
मैं चूप रह जाता हूँ।

मैंने ऐसा क्यों सोचा

आज
जब चिड़िया
देर तक
मुझे एकटक
देखती रही,
फिर सहमी
और सहसा उड़ गयी।

मैं दिन भर
उदास रहा,
कि मैंने
ऐसा क्यों सोचा
कि चिड़िया का
एक पिंजरा होता।

कभी ऐसा हो

कभी ऐसा हो
की देने का मन हो
और लेने वाला
कोई करीब न हो,
कभी हम
कुछ कहना चाहें
और सुनने वाला
कोई करीब न हो,
तब अहसास होता है
की देने और
सुनाने वाले से
लेने और सुनने वाला
ज्यादा कीमती है.

कठिन लेकिन सुखद

अभी चले जाओगे,

जाओ।

अब आये हो,

आओ!

कितना कठिन

लेकिन

कितना सुखद होता है,

जब कोई

इस तरह

सब स्वीकार लेता है।

परख

वह आदमी
कैसा है
पहले परख लो
तब विश्वास करना।

ऐसा हर आदमी
कहता है
और दूसरे को
परखता है
और दूसरे पर
अविश्वास करता है

मुझे लगता है
कि ज्यादा परखना भी
अविश्वास करना है।

मैंने जो लिखा

आज लगता है
मैंने जो लिखा
उसमें वह छूट गया
जो मैंने लिखना चाहा था
मैंने जो भी कहा
उसमें भी
वह रह गया
जो मैंने कहना चाहा था।
तुम उस अनलिखे को
पढ़ लेना
तुम उस अनकहे को
सुन लेना।

दाता

उसने कुछ नहीं जोड़ा,
लोग बताते हैं
पहनने का एक जोड़ा भी
उसके पास
नहीं मिला,
जिन्दगी भर अपना सब
देता रहा,
दे–देकर
सबको जोड़ता रहा।

पक्षी और वृक्ष

सैकड़ों वृक्षों में से
किसी एक वृक्ष को चुन कर
उस पर
अपना घर बनाने के लिए
पक्षी स्वतंत्र है।
पर सैकड़ों पक्षियों में से
किसी एक को
अपना और नितान्त मानकर
जीने का हक
वृक्ष को नहीं।
पक्षी वृक्ष का है
पर वृक्ष सबका है।
शायद यही वृक्ष का सौभाग्य
और मजबूरी है।

झूठा सच

बचपन के
जाने कितने सच
बड़े होने पर
झूठे मालूम पड़ते हैं।

क्या सचमुच
बड़े होते–होते हम
सच को
झूठ करते जाते हैं?

प्रतियोगिता

मैं उसी दिन
समझ गया था
जब मैंने
ईश्वर होना चाहा था,
की अब
कोई जरुर
ईश्वर से
बड़ा होना चाहेगा.
और अब सब
ईश्वर से बड़े हो गए हैं,
कोई
ईश्वर नहीं है.

नियम बने रहते हैं

नियम सब
बने हैं
इसलिए कि
हम बने रह सकें ।
होता यह है
कि हम टूटते जाते हैं
और नियम बने रहते हैं ।
टूटे हुए नियम
जोड़ना आसान है
पर टूटी हुई जिंदगी
जोड़ने में
जिन्दगियाँ गुजर जाती हैं ।

आघात

आँधी
आकर चली गयी है,
वृक्ष शोकाकुल
शान्त खड़े हैं,
इनके बावजूद भी
चिड़ियों के घोंसले
टूटकर गिर पड़े हैं।
क्या अब
कोई चिड़िया
विश्वास से भरकर
नया घोंसला
बना पाएगी?

दूसरा दिन

रोज
लगता है
जैसे कुछ
छूट गया हो,
क्रने को
क्हने को
रह गया हो,
शायद
दो दिन की
जिन्दगी में
इसीलिए
दूसरा दिन होता हो।

करने की भाषा

हम लोग
बड़े श्रमजीवी हैं;
ये मत पूछिए
हम क्या कर सकते हैं।
अपनी अलग
पहचान बनाने के लिए
हम कुछ भी
कर सकते हैं
बड़ी लकीर
मिटा सकते हैं
बड़ी लकीर
घटा सकते हैं
हम जीने की नहीं
करने की भाषा जानते हैं।

दोहरे गणित

ज़िन्दगी में
हमारे चाहे/अनचाहे
बहुत कुछ
हो जाता है
हमारा मनचाहा हुआ
तो लगता है
यह हमने किया
हमारा अनचाहा हुआ
तो लगता है
शिकायत करें/पूछें
कि यह किसने किया
जीवन–भर
इसी दोहरे गणित में
हम जीते हैं
और
समझ नहीं पाते
कि अच्छा–बुरा
चाहा–अनचाहा
अपने लिए सब
हम ही करते हैं
अपनी मौत की इबारत
अपने हाथों
हम ही लिखते हैं।

सागर असीम होकर भी.....

सागर के
शान्त जल में
जब भी कोई
अपना प्रतिबिम्ब देखने
झुकता है,
तब सागर भी
उन आँखों में
अपने को प्रतिबिम्बित होते
देख लेता है।
तब सागर असीम होकर भी
सीमाओं में
समा जाता है।

ना सही

माना कि हममें
भगवान बनने की
योग्यता है
पर इस बात पर
हम इतना
अकड़ते क्यों हैं?
(वह तो किसी
चींटी में भी है)
सवाल सिर्फ
योग्यता का नहीं
हू–ब–हू होने का है
स्वयं को
भगवान मानने/मनवाने का नहीं
स्वयं भगवान
बन जाने का है
और फिर इस बार
ना सही भगवान
एक बेहतर
इन्सान तो बन जाएँ।

कहनी —अनकहनी

कुछ कहने से पहले
हम कितना सोचते हैं
कि इस बार
सब कह देंगे
पर कहने के बाद
मालूम पड़ता है
कि कहा कम
और अनकहा
ज्यादा रह गया हैं.
असल में, भावों के
प्रवाह में शब्दों का सेतु
या तो बन ही नहीं पाता
या टूट जाता हैं ।

चिड़िया

मैं देखता हूँ
चिड़िया
रोज आती है ।
और मैं जानता हूँ
वही चिड़िया
रोज नहीं आती ।
पर यह दूसरी है
मैं ऐसा कैसे कहूँ !
अच्छा हुआ
मैंने कोई नाम नहीं दिया
उसे चिड़िया ही
रहने दिया ।

मुक्ति

जो ज्योति–सा
मेरे ह्रदय में
रोशनी भरता रहा
वह देवता।

जो साँस बन
इस देह में
आता रहा
वह देवता।

जिसका मिलन
इस आत्मा में
विराग का
कोई अनोखा गीत
बनकर, गूँजता
प्रतिक्षण रहा
वह देवता।

मैं बँधा जिससे
मुझे जो मुक्ति का
सन्देश नव
देता रहा
वह देवता।

जो समय की
तूलिका से
मेरे समय पर
निज समय
लिखता रहा
वह देवता।

जो मूर्ति में
कोई रूप धरता
पर अरूपी ही रहा
वह देवता।

जो दूर रहकर भी
सदा से
साथ मेरे है
यही अहसास
देता रहा
वह देवता।

मैं जागता हूँ
या नहीं
यह देखने
द्वार पर मेरे
दस्तक सदा
देता रहा
वह देवता।
जो गति
मेरी नियति था
ठीक मुझ–सा ही
मुझे करता रहा,
वह देवता।

भगवान

भगवान
कितना बड़ा है
मैंने
एक बच्चे से पूछा
उसने दोनों हाथ फैलाये
और जैसे
मुझे समझाया
कि इतना बड़ा

तब सचमुच
मुझे भी लगा
कि जितना जिसके
जीवन में समा जाए
भगवान उतना ही बड़ा।

भाई तुम महान हो

मैंने आकाश से कहा –
तुम बहुत ऊँचे हो
आकाश ने
मुस्कराकर कहा –
तुम मुझसे भी
ज्यादा ऊँचे हो

मैंने सागर से कहा –
तुम खूब गहरे हो
सागर ने
लहराकर कहा –
तुम मुझसे भी
अधिक गहरे हो

मैंने सूरज से कहा –
सूरज दादा!
तुम बहुत तेजस्वी हो
सूरज ने हँसकर कहा –
तुम मुझसे भी
कई गुने तेजस्वी हो

मैंने आदमी से कहा –
भाई तुम महान हो
आदमी झट से बोला –
तुम ठीक कहते हो।

मौत

मुझे मौत में जीवन के फूल चुनना है।

अभी मुरझाना, टूटकर गिरना और अभी खिल जाना है।

कल यहाँ आया था, कौन कितना रहा इससे क्या ?

मुझे आज अभी लौट जाना है।

मेरे जाने के बाद लोग आएँ, अर्थी संभाले, कांधे बदलें,

इससे पहले मुझे खुद संभल जाना है।

मौत आए और जाने कब आए,

अभी तो मुझे संभल–संभलकर रोज–रोज जीना और रोज–रोज मरना है।

सम्बन्ध

लोग चाहते हैं
एक सम्बन्ध
जो सिर्फ दिखता रहे
भले ही न रहे,
मैं आज भी
चाहता हूँ
सबके बीच
एक सम्बन्ध
जो न दिखे
पर रहे।

बारिश

चिड़िया
भीग जाती है
जब बारिश आती है
नदी
भर जाती है
जब बारिश आती है
धरती
गीली हो जाती है
जब बारिश आती है
पर बहुत मुश्किल है
इस तरह
आदमी का
भीगना और
भर पाना
आदमी के पास
बचने के
उपाय हैं न !

विश्वास

मैंने पूछा
चिड़िया से
की आकाश
असीम है
क्या तुम्हें अपने
खो जाने का
भय नहीं लगता ?
चिड़िया कहती है
की वह
अपने घर
लौटना जानती है।

घोंसला

मैंने चिड़िया को
घोंसला बनाते देखा है
मैंने उसे
दाना चुगते
और झट से
आकाश में
उड़ते देखा है
मैं चाहता हूँ
की चिड़िया
मुझे भी
यह सब सिखाए
की किस तरह
जमीन से
जुड़े रहकर
आकाश में
उड़ा जा सकता है,
की किस तरह
असीम आकाश में
उड़ने का अहसास
एक घोंसले में
रहकर भी
जीवित रखा जा सकता है।

निसर्ग

सूरज ने कहा–
अपने द्वार खोलो
मेरी रोशनी
तुम्हारी होगी
वृक्षों ने कहा–
मेरे करीब बैठो
मेरी छाया
तुम्हारी होगी
नदियों ने कहा–
मेरे किनारे आकर
हाथ बढ़ाओ
मेरी बहती धारा
तुम्हारी होगी
मैंने ऐसा ही किया
अब रोशनी मेरी है
छाया भी मेरी है
मेरे जीवन की धारा
निर्बाध बहती है।

रास्ते

चिड़िया !
पूरा आकाश
तुम्हारा है
हर बार
तुम अपने लिए
अपना रास्ता बनाती हो
सुदूर क्षितिज तक
आती – जाती
और चहचहाती हो
दुनिया ने
जितने रास्ते बनाये
उनमें लोग
कभी उजड़े
कभी भटके
कभी भरमाये
पर तुम्हारा
रास्ता साफ है
जिससे गुजरने पर
सारा आकाश
जैसा है
वैसा ही
रहा आता है ।

तुम्हारा होना

चिड़िया !
तुम हो
की तमाम विपदाओं
के बीच भी
नीड़ बनाने
और तिनके लाने का
साहस बना रहता है
तुम हो
की आसपास
होने वाली
भयावह आवाजें
गीत गाने
और चहचहाने को
रोक नहीं पातीं
तुम हो
की नीचे गिराने के
प्रयत्न में खड़े
लोगों के बीच
ऊँचे उड़ने की बात
मन को सहारा देती है.
मैं कृतज्ञ हूँ चिड़िया
की तुम हो।

निर्लिप्त

चिड़िया जानती है
तिनके जोड़ना
नीड़ बनाना
और बच्चों की
परवरिश करना
बड़े होकर
बच्चे बना लेते हैं
अपना अलग नीड़
वह सहज
स्वीकार लेती है
अकेले रहना
उसे नहीं होती
शिकायत
अपने–पराये किसी से भी
वह भूल जाती है
तमाम विपदाएँ
उसे याद रहता है सदा
गीत गाना –चहचहाना
असीम आकाश में उड़ना
और अपना चिड़िया होना।

आत्मीय स्पर्श

जीवन
आकाश सा हो
तो विस्तार
असीम है
जीवन
वृक्ष सा हो
तो छाया
सघन है
जीवन
सूरज सा हो
तो रोशनी
हरदम है
जीवन में
आत्मीय स्पर्श हो
तो हर क्षण
स्वर्णिम है।

अपना घर

चिड़िया तुम आती हो
मेरे घर
मुझे अपना घर
तब बहुत अच्छा
लगने लगता है.
तुम बना लेती हो
अपना घर
मेरे घर में
मुझे यह भी
अच्छा लगता है.
मैं जनता हूँ
तुम मेरे घर
नहीं आती
अपने घर आती हो
पर अपने घर
आने के लिए
तुम्हारा मेरे घर आना
मुझे अच्छा लगता है
सचमुच
तुम्हारे घर ने
मेरे घर को
अपना घर बना दिया।

शीशा देने वाला

जब भी मैं
रोया करता
माँ कहती –
यह लो शीशा,
देखो इसमें
रोनी सूरत अपनी
अनदेखे ही शीशा
मैं सोच–सोचकर
अपनी रोनी सूरत
हँसने लगता.
एक बार रोई थी माँ भी
नानी के मरने पर
फिर मरते दम तक
माँ को मैंने खुलकर हँसते
कभी नहीं देखा।
माँ के जीवन में शायद
शीशा देने वाला
अब कोई नहीं था.
सबके जीवन में ऐसे ही
खो जाता होगा
कोई शीशा देने वाला।

खिड़की

सम्बन्धों के बीच
पहले
एक दिवार
हम खुद
खड़ी करते हैं
फिर उसमें
एक खिड़की
लगाते हैं
पर जिंदगी–भर
करीब रहकर भी
हम खुलकर
कहाँ मिल पाते हैं ?

जिंदगी–भर

हम जिंदगी–भर
जीते हैं
कुछ इस तरह
की जैसे
जीना नहीं चाहते
जीना पड़ रहा है
और मरते वक्‌त
मरते हैं
कुछ इस तरह
की जैसे
मरना नहीं चाहते
पर मरना पड़ रहा है
शायद इसीलिए
बारम्बार हमें जीवन
दुहराना पड़ रहा है !

उड़ान

नदी के ऊपर
उड़ती चिड़िया ने
आवाज़ दी
नदी ने मुस्कुराकर कहा –
बोलो चिड़िया

चिड़िया ने
और ऊँची उड़ान ली
पहाड़ के ऊपर
उड़ती चिड़िया ने
आवाज़ दी
पहाड़ ने धीरे से कहा –
बोलो चिड़िया

चिड़िया ने
और ऊँचे उड़ते–उड़ते पुकारा
पर आवाज़ खो गयी

चिड़िया लौट आयी है
वह कहती है
कि अपनी आवाज
अपने तक आती रहे
इतना ही
ऊँचे उड़ना।

आदत

चिड़ियों का
आकश में
ऊँचे उड़ना
प्रकृति का
सहज–सरल
और उन्मुक्त होना,
अब हमें प्रेरणा नहीं देता।
वृक्षों का
हवाओं में लहलहाना
और फल–फूलों से भरकर
कृतज्ञता से झुक जाना
अब हमें आन्दोलित नहीं करता।
किसी का
सच्चा होना
भला और अच्छा होना
अब हमें चुनौती नहीं देता।
असल में
हमारी आदत नहीं रही
आदतें बदलने की।

सफेद पर सफेद

मैंने कई बार
उससे कहा
कि सफेद पर सफेद से
मत लिखा करे,
इस तरह लिखना
कहाँ दिखता है?
उसका कहना है कि
सवाल लिखने का है
दिखने का खयाल
एकदम झूठा है,
और सफेद पर
काला लिखना
ठीक भी नहीं लगता,
सफेद पर तो
सफेद ही लिखा जाता है,
तब कितना भी लिखो–
कागज़
सफेद रहता आता है।

प्रकृतिस्थ होना

मैंने
सूरज को बुलाया है
वृक्ष भी आएँगे
चिड़िया भी आएगी,
नदी और सागर
दोनों ने
आने को कहा है,
धरती और आकाश
दोनों के नाम
मैंने चिठ्ठी लिख दी है,
कि हमारी
माटी की गुड़िया के
ब्याह में
सभी को आना है।
लोग हँसते हैं,
कहते हैं
यह मेरा बचपना है।
सचमुच, प्रकृतिस्थ होना
बचपन में
लौटना है।

आकाश

रात आती है
सारा आकाश
तारों से
भर जाता है
दिन होते ही
मानो सब
झड़ जाता है
इसमें सोचो
तो सोचते ही रहो
हाथ क्या आता है?
जो समझते हैं
वे समझते हैं
कि डूबते/उगते
सितारें हैं
आकाश
अकेला था
अकेला ही
रह जाता है।

गए

हमें लगता है
कि हम बहुत बीत गए
अब रहे कम
गए ज्यादा हैं
जितने रहे
उतने भी
गए की ओर ही हैं
और एक रोज
ऐसा भी जाएगा
जब हम
गए ही हो जाएँगे
सुनाई पड़ेगा सब ओर
कि नहीं रहे
गए।